UNIVERSAL LIBRARY

OU_178962

UNIVERSAL LIBRARY

हिन्दी-मन्दिर-चरितावली—३

चन्द्रगुप्त

लेखक

रामनरेश त्रिपाठी

प्रकाशक

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

पहला संस्करण } जनवरी, १९३३ { मूल्य चार आने

प्रकाशक

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

पहला संस्करण—२०००, १९३३

मुद्रक

रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी-मन्दिर प्रेस, इलाहाबाद

सूची

विषय	पृष्ठ
इतिहास का आधार	१
मौर्य	६
जन्म और बचपन	८
चाणक्य से भेंट	१४
पब्बत की हत्या	१५
चन्द्रगुप्त की शिक्षा	१७
राजा बनने का उद्योग	१७
भूल का पता	१८
तक्षशिला में	१९
सिकंदर की चढ़ाई	२०
सिकंदर से भेंट	२१
निराशा और आशा के बीच में	२३
पंजाब में विद्रोह	२४
पाटलिपुत्र पर चढ़ाई	२६

पाटलिपुत्र पर अधिकार	२७
चाणक्य की चाल	२८
राक्षस की चालें	३०
चन्द्रगुप्त की सेना	३४
सैल्यूकस की चढ़ाई	३५
सुदर्शन झील	३८
चन्द्रगुप्त का अंतिम काल	३९
मैगस्थनीज़	३९
मैगस्थनीज़ के वर्णन	४०
चन्द्रगुप्त का शासन	५०
राज-प्रबन्ध	५१
पाटलिपुत्र का नगर-प्रबन्ध	५४
लगान	५७
कर	५७
वेतन	५७
विविध	६०

चन्द्रगुप्त

इतिहास का आधार

इतिहासकारों के मत से चन्द्रगुप्त ही भारतवर्ष का पहला सम्राट् है, जिसका कुछ ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है।

ईसा से ३२५ वर्ष पहले यूनान के राजा सिकंदर ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की थी। उसकी सेना में कुछ ऐसे विद्वान् भी थे, जिन्होंने उसकी विजय के वर्णनों के साथ चन्द्रगुप्त और उस समय के भारतवर्ष

का भी बहुत कुछ वर्णन किया है। उनके सिवा कुछ यूनानी और रोमन इतिहासकार और भी हैं, जिन्होंने सिकंदर की चढ़ाइयों का हाल लिखा है। उनमें से कुछ के नाम ये हैं—

टालमी, अरिस्टोबुलस, यूमेनीस, चारस, क्लाइटार्कस, एनिक्सेमनीज़, डायोग्नेटस, बीटन, किर्सिलस, डायोडोरस, सिक्यूलस, एरियन, प्लुटार्क, कर्टियस, जस्टिनस, पैट्रोक्लीज, स्ट्रैबो, नियार्कस, मैगस्थनीज़ और डायमेचस; इत्यादि।

इनके बाद चीन के बौद्ध-यात्रियों का नम्बर है। वे यात्री बौद्ध-साहित्य के अध्ययन और बौद्ध-तीर्थों के दर्शन के लिये समय-समय पर भारतवर्ष की यात्रा किया करते थे। अपने यात्रा-वर्णनों में उन्होंने अपने रास्ते के सुख-दुख के सिवा उस समय के बौद्ध स्थानों का आखों-देखा हाल भी लिखा है, तथा भारतवर्ष के तत्कालीन और कुछ पहले के प्रतापी सम्राटों के वैभव का जी खोलकर वर्णन किया है।

उन्होंने उस समय के साधारण लोगों की हालत पर भी प्रकाश डाला है। उनके ग्रन्थों में प्रसंग-वश चन्द्रगुप्त का, और उसके बाद के भारत का ज़िक्र भी आ गया है।

प्रसिद्ध तीन चीनी-यात्रियों के नाम ये हैं—

फाहियान, सुङ्ग्युन, ह्वेनसांग।

ये तो भारतवर्ष के बाहर के प्रमाण हैं। अपने देश में संस्कृत, पाली और प्राकृत भाषा के साहित्य में चन्द्रगुप्त और उसके आसपास के समय का अच्छा वर्णन मिलता है।

चन्द्रगुप्त के प्रधान मन्त्री चाणक्य का लिखा हुआ 'अर्थशास्त्र' नाम का एक संस्कृत-ग्रन्थ मिला है। उसमें चन्द्रगुप्त के राज्य के क़ायदे-कानून और उस समय के लोगों की रहन-सहन का बहुत विस्तृत और प्रामाणिक वर्णन है।

संस्कृत के एक कवि विशाखदत्त ने 'मुद्रा-राक्षस' नामक एक नाटक लिखा है। जिसमें चाणक्य

की उन कूटनीतियों का वर्णन है, जिनके सहारे उसने चन्द्रगुप्त को गद्दी पर बैठाया था।

संस्कृत में कहानियों की एक बड़ी पुस्तक है। उसका नाम है—कथासरित्सागर। वह गुणाढ्य की लिखी हुई 'वृहत्कथा' नाम की पैशाची भाषा की एक पुस्तक का अनुवाद है, जिसे सोमदेव ने किया था। उसमें चन्द्रगुप्त और चाणक्य की बहुत-सी रोचक कथायें हैं।

पुराणों में भी चन्द्रगुप्त का वर्णन मिलता है। मत्स्य, वायु, ब्रह्माण्ड, विष्णु, गरुड़, भविष्य पुराण तथा श्रीमद्भागवत में चन्द्रगुप्त का वर्णन प्रसंग-वश आया है।

संस्कृत में अभी तक एक ही इतिहास-ग्रन्थ मिला है, जिसका नाम 'राजतरङ्गिणी' है। इसे कल्हण नाम के एक विद्वान् ने बनाया था। इसमें भी चन्द्रगुप्त का वर्णन है।

बौद्धों और जैनियों के धार्मिक ग्रन्थों में भी चंद्रगुप्त का वर्णन मिलता है। चंद्रगुप्त से दो सौ वर्ष पहले बौद्ध-धर्म का प्रादुर्भाव हुआ था। चंद्रगुप्त के समय में बौद्ध-धर्म बड़े विस्तार में फूलने-फलने लगा था। चन्द्रगुप्त के पौत्र सम्राट् अशोक ने तो बौद्ध-धर्म की दीक्षा ही ले ली थी। जैन-ग्रन्थों में लिखा है कि चन्द्रगुप्त जैन-धर्मावलम्बी था। इससे उनमें चन्द्रगुप्त का वर्णन विशेष विस्तार से किया गया है। बौद्ध-ग्रन्थ पाली भाषा में लिखे गये हैं और जैन-ग्रन्थ प्राकृत में। दोनों भाषायें संस्कृत से निकली हैं।

बौद्ध-धर्म का प्रचार तिब्बत में भी है। इससे वहाँ के धर्म-ग्रन्थों में भी चन्द्रगुप्त और उसके वंशजों का हाल मिलता है।

सम्राट् चन्द्रगुप्त का इतिहास तैयार करने के ये ही साधन मिलते हैं।

यूनानी लेखकों ने भारतवर्ष के स्थानों और मनुष्यों के नामों के विचित्र उच्चारण लिखे हैं। उन्हीं लोगों ने भारतवर्ष का नाम 'इण्डिया' रक्खा था, जो अब सारे संसार में प्रसिद्ध हो गया है। उन लोगों ने चन्द्रगुप्त के नाम के भी कई उच्चारण लिखे हैं। जैसे- सैण्ड्राकोट्टस, सैण्ड्रोकिप्टस, एण्ड्रोकोट्टस इत्यादि। पाटलिपुत्र को उन्होंने 'पालीबोथरा' लिखा है।

मौर्य

ईसा से लगभग छः सौ वर्ष पहले, जब बुद्ध भगवान जीवित थे, राजा विडूडभ ने शाक्य राजाओं पर हमला किया था। उस समय शाक्य घराने के कुछ लोग अपना गाँव छोड़कर हिमालय पर्वत के पास एक सुन्दर स्थान में जा बसे थे। उन्होंने वहाँ एक नगर बसाया, जिसका आकार मयूर (मोर) की गर्दन का-सा था। उन्होंने उसका नाम 'मयूर नगर' रक्खा।

उनके यहाँ मयूर की बड़ी प्रतिष्ठा थी। इसीसे वे लोग मौर्य कहे जाने लगे। यहाँ तक कि मौर्य नाम की उनकी एक जाति ही बन गई थी। भगवान् बुद्ध का देहान्त होने पर मौर्यों ने कुशीनारा के मल्लों के पास अपना दूत भेजकर कहलाया था कि "आप भी क्षत्रिय हैं, हम भी क्षत्रिय हैं, हमें भी बुद्ध भगवान् के शरीर का भाग पाने का हक है।"† इससे यह भी प्रमाणित होता है कि मौर्य लोग भी शाक्य वंशी थे। चन्द्रगुप्त इसी मौर्य्य घराने का राजकुमार था।

प्राचीन पुस्तकों में यह वर्णन भी मिलता है कि मगध के राजा महापद्मनन्द या महानन्द की दो रानियाँ थीं—सुनन्दा और मुरा। मुरा नाइन

†अथ खो पिप्पलबनिया मोरिया कोसिनारकानां मल्लानां दूतं पाहेसुं। भगवापि खत्तियो मयमपि खत्तिया। मयमपि अरहाम सरीरानं भागं। महापरिनिब्बाणसुत्त।

थी। उसीके गर्भ से चन्द्रगुप्त का जन्म हुआ था। इसीसे वह 'मौर्य' कहलाता है।

जन्म और बचपन

मौर्यों के साथ राजा विड्डभ और उसके उत्तराधिकारियों का बैर बराबर चलता रहा। यहाँ तक कि अंत में मौर्य राजा की रानी ने अनाथ होकर, भागकर पाटलिपुत्र में शरण ली। उस समय उसको गर्भ था, जिससे चन्द्रगुप्त का जन्म हुआ।

चन्द्रगुप्त की माता ने शिशु को एक ओखली में रखकर एक घोष के द्वार पर डाल दिया। वहाँ चन्दो नाम का वृषभ राजकुमार की रक्षा करता रहा। पीछे एक ग्वाले ने उसकी रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिये। कुछ बड़े होने पर एक शिकारी ने उस ग्वाले से चन्द्रगुप्त को ले लिया। तब से चन्द्रगुप्त उसी शिकारी के घर में, उसीके गाँव में रहने लगा। चन्दो वृषभ ने उसे गुप्त रक्खा था, इसीसे उसका नाम चन्द्रगुप्त पड़ गया।

दूसरी कथा के अनुसार चन्द्रगुप्त महानन्द का सबसे बड़ा पुत्र था, जो मुरा नाम की शूद्रा के पेट से पैदा हुआ था। बड़ी रानी सुनन्दा के आठ पुत्र थे। वे चन्द्रगुप्त से द्वेष रखते थे, क्योंकि वह नाइन के गर्भ से पैदा हुआ था और बड़े होने के कारण अपने को राज्य का अधिकारी समझता था। द्वेष का दूसरा कारण यह भी था कि चन्द्रगुप्त उन सबसे अधिक बुद्धिमान् था। उसकी तीव्र बुद्धि की कई कहानियाँ कही जाती हैं। जैसे—

एक बार सिंहलद्वीप के राजा ने एक नक़ली सिंह लोहे के एक पिंजड़े में बन्द करवाके राजा महानन्द के दरबार में भेजा और कहलाया कि पिंजड़ा टूटने न पावे और सिंह इसमें से निकल जाय। महानन्द और उसके आठों पुत्रों ने बहुत बुद्धि दौड़ाई, पर कोई तरकीब उन्हें न सूझी। अंत में वह चन्द्रगुप्त को दिया गया। चन्द्रगुप्त ने पिंजड़े को पहले पानी में रक्खा, पर कोई नतीजा न निकला। तब उसने

पिंजड़े के चारों तरफ़ आग सुलगवा दी। सिंह लाख और राल का बना था। आँच पाते ही वह गलकर बह गया। इससे चन्द्रगुप्त की बुद्धि की बड़ी प्रशंसा हुई।

इसी प्रकार एक दूसरे राजा ने एक बार महानन्द के दरबार में एक अँगीठी में दहकती आग, एक बोरा सरसों और एक मीठा फल भेजा। महानन्द के दरबार का कोई आदमी इसका अर्थ न समझ सका। तब चंद्रगुप्त ने सोचकर राजा से कहा—अँगीठी का यह मतलब है कि मेरा क्रोध आग के समान सबको जला देगा। सरसों से यह बताया गया है कि मेरे पास अगणित सेना है और मीठे फल का अभिप्राय यह है कि मेरे साथ मित्रता रखने का फल मीठा होता है। चंद्रगुप्त ने उत्तर में एक घड़ा जल, एक पिंजड़े में थोड़े से तीतर और एक रत्न भेजने को कहा। जिसका अर्थ यह था कि मैं जल से आग बुझा दूँगा; मेरे तीतर

तुम्हारी सारी सेना को चुन-चुनकर मार डालेंगे और मेरे साथ की हुई मित्रता एक अमूल्य रत्न है।

ये कहानियाँ इस बात को सूचित करती हैं कि चन्द्रगुप्त बचपन ही से बुद्धिमान और चतुर था।

चाणक्य* से भेंट

महानन्द के समय में पंजाब के तक्षशिला नगर में एक बड़ा विश्व-विद्यालय था, जहाँ दूर-दूर के विद्यार्थी-गण सब विषयों की शिक्षायें पाते थे। चाणक्य उसी तक्षशिला का निवासी एक ब्राह्मण का पुत्र था। उसने तीनों वेद और सब शास्त्र पढ़े थे। मंत्र-विद्या में वह बड़ा निपुण और नीति-शास्त्र में बड़ा कुशल था।

शिक्षा पाकर वह जीविका की खोज में पाटलिपुत्र गया था। वह देखने में कुरूप था, उसकी आँखें

*चाणक्य का विशेष हाल हमारी लिखी हुई 'चाणक्य' नाम की पुस्तक में देखिये। लेखक

लाल थीं और उसके आगे के दाँत भी टूटे हुये थे। एक दिन उसकी मुलाक़ात महानन्द के मंत्री शकटार से हुई। शकटार महानन्द का नाश करना चाहता था। उसने चाणक्य को अपने काम के लिए बड़ा उपयोगी समझा। एक दिन वह चाणक्य को राज-महल में ले गया। उस समय दान लेने के लिये बहुत-से ब्राह्मण वहाँ एकत्र थे। चाणक्य प्रधान आसन पर जाकर बैठ गया। इतने में राजा आया। उसने प्रधान आसन पर एक कुरूप और अपरिचित ब्राह्मण को बैठा देखकर पूछा—तुम कौन हो?

चाणक्य ने कहा—मैं हूँ।

राजा ने क्रोध में आकर कहा—इस नीच ब्राह्मण को धक्के देकर निकाल दो।

चाणक्य ने आँखें लाल करके कहा—राजा घमंडी है। संसार इसका नाश देखेगा।

राजा ने क्रोध से विह्वल होकर कहा—पकड़ो इस शूद्र को।

चाणक्य भागकर राजमहल में छिप गया। रात में चाणक्य शकटार और राजकुमार पब्बत से मिला। पब्बत को उसने राजा बनाने का वचन दिया।

राजकुमार पब्बत ने अपनी माता से एक गुप्त मार्ग की चाबी लाकर चाणक्य को महल से बाहर किया और राज्य के लोभ में वह स्वयं भी चाणक्य के साथ हो लिया।

दोनों विन्ध्याचल के जङ्गलों में चले गये। चाणक्य ने वहाँ धन जमा करना शुरू किया। पब्बत को चाणक्य साथ तो ले गया और उसे राजा बनाने का उसने वादा भी किया था; पर पब्बत में राजा होने योग्य गुण बहुत कम थे। इससे चाणक्य का मन उस पर जमता नहीं था।

कई करोड़ का धन जमा करके चाणक्य किसी दूसरे राजकुमार की खोज में निकला। घूमते-घामते वह उसी गाँव में जा निकला, जिसमें चन्द्रगुप्त एक शिकारी के घर में रहता था।

चन्द्रगुप्त दूसरे लड़कों के साथ जङ्गल में पशु चराने गया था। वहाँ वह 'राजा' का खेल खेल रहा था। वह राजा बना था; कुछ लड़के दरबारी, कुछ लड़के सिपाही और कुछ लड़के चोर और डाकू बनाये गये। वह मुक़द्दमा सुनने बैठा। गवाहियाँ गुज़रने लगीं। अन्त में अपराध प्रमाणित हो जाने पर राजा ने फ़ैसला दिया कि अपराधियों के हाथ-पैर काट डाले जायँ।

सिपाहियों ने उज्र किया कि हमारे पास कुल्हाड़े तो हैं नहीं। चन्द्रगुप्त ने कहा—राजा का हुक्म टल नहीं सकता। लकड़ी के डंडे में बकरी की सींग बाँधकर कुल्हाड़ी बना लो।

ऐसा ही किया गया और अपराधियों के हाथ-पैर काट डाले गये। फिर चन्द्रगुप्त ने कहा—अच्छा हाथ-पैर जुड़ जायँ। हाथ-पैर जुड़ गये।

यह कोई असम्भव बात न थी। लड़कों के खेल में मरना, जीना, काटना, जोड़ना हरवक्त चला

करता है। चाणक्य यह खेल देख रहा था। उसे चन्द्रगुप्त में वे गुण दिखाई दिये जिनकी खोज में वह निकला था।

चन्द्रगुप्त को लेकर वह शिकारी के पास गया। शिकारी के सामने एक हज़ार मुद्रा रखकर उसने कहा—यह लड़का मुझे दे दो। मैं इसे सब विद्यायें सिखाकर राजा बनाऊँगा।

शिकारी ने दे दिया। चाणक्य ने ऊन के तागे में सोने के तार बटकर उसे चन्द्रगुप्त के गले में पहना दिया और उसे साथ लेकर अपनी राह ली।

राजकुमार पब्बत के गले में भी उसने ऐसा ही एक तागा पहना रक्खा था।

पब्बत की हत्या

पब्बत और चन्द्रगुप्त चाणक्य के साथ रहने लगे। एक दिन दोनों को सपना आया। दोनों ने अपने-अपने सपने चाणक्य को सुनाये। चाणक्य ने

मन में यह निश्चय कर लिया कि चन्द्रगुप्त ही सम्राट होगा, पब्बत नहीं हो सकता।

एक दिन तीनों किसी न्योते में खीर खाकर लौटे थे और एक वृक्ष के नीचे आराम कर रहे थे। कुछ देर सो लेने के बाद चाणक्य की नींद खुल गई। उसने राजकुमार पब्बत की परीक्षा के लिये उसे जगाकर, उसके हाथ में तलवार देकर कहा— चंद्रगुप्त के गले में पड़े हुये तागे को बिना काटे, बिमा तोड़े और बिना गाँठ खोले हुये मेरे पास ले आओ।

पब्बत की समझ में यह बात न आई। वह खाली हाथ लौट आया।

कई दिन बाद जब एक दिन पब्बत पड़ा सो रहा था, चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के हाथ में तलवार देकर वही बात कही। चन्द्रगुत ने तलवार से पब्बत का सिर काट डाला और तागा लाकर चाणक्य के सामने रख दिया।

चाणक्य चन्द्रगुप्त की तीक्ष्ण बुद्धि देखकर बड़ा ख़ुश हुआ।

चन्द्रगुप्त की शिक्षा

चाणक्य सब प्रकार की विद्याओं में निपुण था। उसने छः-सात बरसों तक ख़ूब मन लगाकर चन्द्रगुप्त को शिक्षा दी। राजनीति के साथ-साथ उसे युद्ध-विद्या भी सिखलाई।

राजा बनने का उद्योग

जब चन्द्रगुप्त शत्रुओं को जीतने और राज सँभालने योग्य समझ पड़ा तब चाणक्य ने अपना ख़ज़ाना खोला और चुने हुये आदमी भरती करने शुरू किये।

एक अच्छी-सी सेना तैयार करके उसने चन्द्रगुप्त को दी और कहा—अपनी शक्ति और शिक्षा को आज़माओ।

चन्द्रगुप्त ने सेना की सहायता से आस-पास के

गाँवों और शहरों को जीतना शुरू किया। पर परिणाम यह हुआ कि चारों तरफ़ के लोग उठ खड़े हुये। उन्होंने घेरकर चन्द्रगुप्त की सेना को तहस-नहस कर डाला।

भूल का पता

चन्द्रगुप्त और चाणक्य दोनों जंगल में भाग गये। उनकी समझ में यह बात न आई कि यकायक सब लोग क्यों विरुद्ध उठ खड़े हुये। अपनी भूल का पता लगाने के लिये वे भेस बदलकर गाँव-गाँव घूमने और लोगों के विचारों का पता लगाने लगे। वे दिनभर घूमते और रात में किसी गृहस्थ के दरवाज़े पर ठहर जाते और उनकी बातें सुनते।

एक दिन एक बालक पुवे खा रहा था। वह बीच का भाग खाता जाता था और किनारों को छोड़ता जा रहा था। यह देखकर उसकी माँ ने कहा—तू भी चन्द्रगुप्त हो रहा है क्या?

लड़के ने पूछा—चन्द्रगुप्त ने क्या किया था माँ ?

माँ ने कहा— चन्द्रगुप्त राज्य लेना चाहता था। सीमाप्रान्तों पर अधिकार किये बिना ही वह राज्य के बीच के गाँवों और शहरों पर अधिकार करने चला। लोगों ने चारोंओर से घेर कर उसे नष्ट कर डाला।

चाणक्य और चन्द्रगुप्त को अपनी भूल का पता लग गया।

तक्षशिला में

भारतवर्ष में पंजाब ही एक ऐसा प्रांत है, जहाँ विदेशियों के हमले हमेशा से होते आ रहे हैं। पंजाब पाटलिपुत्र से दूर भी पड़ता था, इससे विद्रोह करने के लिये यह स्थान ठीक भी पड़ता था।

चाणक्य उस स्त्री की आलोचना से लाभ उठाकर सीमाप्रांत से विजय करते हुये चलकर पाटलिपुत्र पर अधिकार प्राप्त करने की धुन में

चन्द्रगुप्त को लेकर तक्षशिला पहुँचा। तक्षशिला विद्या का भी केन्द्र था और विद्रोहियों का भी। दोनों वहीं रहकर अपने काम की सिद्धि के लिये रास्ता खोजने और बनाने लगे।

सिकंदर की चढ़ाई

यूनान के राजा सिकंदर ने ईसा से ३२५ वर्ष पहले भारत पर चढ़ाई की थी। वह बड़ा वीर और प्रतापी था। उसके पास ५० हज़ार सिपाही थे। सिन्धु नदी के आसपास के राजाओं को जीतता हुआ, क़िलों पर क़ब्ज़ा करता हुआ वह तक्षशिला की तरफ़ बढ़ रहा था। तक्षशिला के राजा अम्भी ने बहुत-सा उपहार लेकर उसका स्वागत किया और अपने पड़ोसी राजा पुरु को परास्त करने की उससे प्रार्थना की।

सिकन्दर ने झेलम नदी पार करके पुरु पर आक्रमण किया। दोनों ओर से भयानक मार-काट

हुई। अंत में सिकन्दर विजयी हुआ। पर पुरु की वीरता से प्रसन्न होकर उसने उसका राज ही उसे वापस नहीं कर दिया, बल्कि उसे मित्र बनाकर झेलम, चनाब और रावी के बीच के जीते हुये राज्यों और राजाओं को भी उसके अधीन कर दिया।

सिकन्दर से भेंट

सिकन्दर जब तक्षशिला में ठहरा हुआ था तब चाणक्य की सम्मति से चन्द्रगुप्त ने सिकन्दर से भेंट की और उसे पाटलिपुत्र पर आक्रमण करने के लिये उत्तेजित किया। अपनी विजयों से गर्वित सिकन्दर उत्साहित होकर आगे बढ़ा। व्यास नदी तक पहुँचते-पहुँचते उसकी सेना ने पाटलिपुत्र की सेना की अधिकता और वीरता की बातें सुन-सुनकर हिम्मत हार दी और आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया।

यूनानी सेना यद्यपि प्रबल थी; पर उन

दिनों भारतीय सेना भी वीरता में उससे कम नहीं थी। भारतीय लोग हमेशा फूट से पराजित हुये हैं, बल या वीरता की कमी से नहीं। सिन्धु से व्यास तक पहुँचने में सिकन्दर की सेना को लोहे के चने चबाने पड़े थे और १९ महीने लगे थे। भारतीयों की वीरता से यूनानी सेना का दिल दहल गया था। सिकन्दर को विवश होकर वापस लौटना पड़ा। इस इरादे का पता लगते ही चन्द्रगुप्त ने सिकन्दर के सामने पहुँचकर उसे उसकी कायरता पर लज्जित करना चाहा। इस पर सिकन्दर ने उसके वध की आज्ञा दी।

चन्द्रगुप्त किसी तरह वहाँ से भाग निकला। जस्टिन कहता है—'इस राजकुमार ने सिकन्दर के साथ बड़ी ढिठाई से बातचीत की। सिकन्दर ने उसे मृत्यु-दंड दिया। पर किसी तरह भागकर उसने अपने प्राण बचाये।'

निराशा और आशा के बीच में

यूनानी लेखकों ने लिखा है:—

'सिकन्दर को वापस जाता देखकर चन्द्रगुप्त बहुत ही निराश हुआ। चलते-चलते थककर वह एक वृक्ष के नीचे सो गया। इसी समय एक भयानक सिंह जङ्गल से निकला। वह चन्द्रगुप्त के पास आया और उसके शरीर का पसीना चाटने लगा। चन्द्रगुप्त चुपचाप पड़ा हुआ यह दृश्य देखता रहा। सिंह उसे किसी प्रकार की हानि पहुँचाये बिना लौट गया, तब चन्द्रगुप्त को फिर अंदर से उत्तेजना मिली; उसकी महत्वाकांक्षा फिर जाग उठी। एक दिन जब वह सिकन्दर के सेनापतियों के विरुद्ध विद्रोह करने की तरकीबें सोच रहा था, जङ्गल से एक हाथी निकला; उसने चन्द्रगुप्त को पकड़कर अपनी पीठ पर बैठा लिया।' इन दोनों घटनाओं ने चन्द्रगुप्त के भाग्य के रास्ते पर प्रकाश का काम किया।

पंजाब में विद्रोह

सिकंदर के लौट जाने पर पंजाब में बड़ी उथल-पुथल मच गई। आपस में फूट पहले ही से थी; अब और बढ़ गई; क्योंकि सिकन्दर बहुत-से राजाओं को राजा पुरु और राजा अम्भी के मातहत कर गया था। वे लोग अपने ऊपर किसी का आधिपत्य स्वीकार करने को तैयार न थे। चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने जनता की इस मानसिक अशान्ति से लाभ उठाया। वे क्रान्ति की तैयारी करने लगे। नीति-निपुण चाणक्य ने यूनानियों के विरुद्ध वातावरण तैयार करने में रात और दिन एक कर दिये।

इसी बीच में सिकंदर के एक अधिकारी ने, जिसे सिकंदर पंजाब में छोड़ गया था, राजा पुरु की हत्या कर डाली। इससे जनता में बड़ा असंतोष फैला। इसके बदले में सिकंदर के एक दूसरे अधिकारी फिलिप्पोस का वध करा दिया गया। विद्रोह के लिये इससे और भी उत्तेजना मिली।

अब केवल एक योग्य नेता की आवश्यकता थी। चन्द्रगुप्त ने इस अवसर का पूरा उपयोग किया और एक सेना इकट्ठी करके उसने पंजाब और सीमाप्रान्त से यूनानियों को खदेड़ दिया।

फिलिप्पोस की हत्या का समाचार जब सिकंदर के पास पहुँचा तब वह बहुत ही क्रुद्ध हुआ। उसने तत्काल सिन्धु नदी के तटवर्ती सेनापति यूडीमोस को आज्ञा लिख भेजी कि फिलिप्पोस के स्थान पर तुम तैनात किये जाते हो; पर यूडीमोस के पास काफ़ी सेना न थी और इधर चाणक्य और चन्द्रगुप्त का दबदबा दिन पर दिन बढ़ रहा था; इससे यूडी-मोस की हिम्मत चन्द्रगुप्त का मुक़ाबला करने की न हुई।

ईसा से ३२३ वर्ष पहले सिकंदर की मृत्यु हो गई। उसके दो सेनापति एन्टिगोनस और सैल्यूकस उत्तराधिकार के लिये आपस में लड़ने लगे। इससे यूनानियों का ज़ोर और भी कम हो गया। ईसा से

३१७ वर्ष पहले यूडीमौस भी बची-खुची यूनानी सेना लेकर यूनान लौट गया। इस तरह सिकंदर के मरते ही भारतवर्ष से यूनानियों की रही-सही शक्ति भी निकल गई।

चाणक्य और चन्द्रगुप्त को विद्रोह में पूरी सफलता मिली। पंजाब और सीमाप्रान्त उनके प्रभाव में आ गये। उधर के राजाओं और प्रजा ने भी चन्द्रगुप्त को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार किया और वे उसकी सहायता के लिये सब तरह से तैयार हो गये।

पाटलिपुत्र पर चढ़ाई

पंजाब का विद्रोह पञ्जाब को स्वतन्त्र करने के लिये नहीं था, बल्कि मगध का राज्य लेने के लिये था। यदि सिकंदर मगध पर चढ़ाई करता तो संभव था कि चन्द्रगुप्त यूनानियों का शत्रु न होता। यूनानियों को बाहर खदेड़कर चन्द्रगुप्त पाटलिपुत्र

की तरफ़ मुड़ा। शक, यवन, किरात, काम्बोज, पारसीक, बाल्हीक आदि जातियों की एक बड़ी सेना लेकर वह पाटलिपुत्र की तरफ़ चला। चाणक्य ने सीमा-प्रान्त के एक शक्तिशाली राजा पर्वतक को पाटलिपुत्र का आधा राज्य देने का लोभ देकर अपने साथ कर लिया था। वह एक बड़ी सेना लेकर चन्द्रगुप्त के साथ था।

पाटलिपुत्र पर अधिकार

चन्द्रगुप्त और उसके मित्रों की सेना बहुत दिनों तक पाटलिपुत्र को घेरे रही। अंत में पुत्रों सहित राजा महानन्द मारा गया। कहा जाता है कि चाणक्य ने स्वयं तलवार से राजा और उसके पुत्रों का वध किया था। यह भी किम्बदन्ती चली आती है कि चाणक्य ने विष मिली हुई मिठाई खिलवाकर महानन्द और उसके आठ पुत्रों के प्राण लिये थे।

राजा महानन्द के मारे जाने पर भी पाटलि-

पुत्र पर चन्द्रगुप्त का अधिकार न हो पाया। महानन्द का प्रधान मन्त्री राक्षस, जो ब्राह्मण था और नीति-शास्त्र का बड़ा भारी पण्डित था, महानन्द के भाई सर्वार्थसिद्धि को गद्दी पर बैठाकर राज-काज चलाने लगा।

चाणक्य की चाल

अब चाणक्य ने नीति से काम लिया। उसने अपने मित्र विष्णुशर्मा को जीवसिद्धि के नाम से राक्षस की नौकरी में लगवा दिया। जीवसिद्धि थोड़े ही दिनों में राक्षस और सर्वार्थसिद्धि का बड़ा विश्वासपात्र हो गया। जीवसिद्धि की संगति के प्रभाव से एक दिन सर्वार्थसिद्धि संसार से विरक्त होकर बन में चला गया।

यह समाचार पाकर राक्षस बहुत चिन्तित हुआ। वह सर्वार्थसिद्धि को बन से वापस लाने के लिये रवाना हुआ। यह समाचार अपने भेदियों

से पाकर चाणक्य ने उसके पहुँचने के पहले ही सर्वार्थसिद्धि को मरवा डाला। इससे राक्षस और भी सोच में पड़ गया।

राक्षस ने तपोवन में कुछ दिन रहकर सोचा कि पर्वतक और चन्द्रगुप्त में फूट डाले बिना काम न चलेगा। उसने पर्वतक को कुल राज्य देने का लोभ देकर अपनी ओर फोड़ लिया। यह समाचार पाकर चाणक्य पर्वतक के वध की धुन में लगा। उसने बहुत से विश्वासी जासूसों को चारोंओर नियुक्त किया।

जीवसिद्धि राक्षस के साथ था ही। राक्षस ने उसके साथ चन्द्रगुप्त के लिये एक विषकन्या भेजी। जीवसिद्धि चाणक्य का आदमी था। चाणक्य को यह भेद मालूम होते ही उसने जीवसिद्धि के साथ उस विषकन्या को पर्वतक के पास भेजकर निवेदन कराया कि राक्षस ने यह उपहार भेजा है।

पर्वतक उसी रात में उस विषकन्या के

संग से मर गया। उसके मरने की ख़बर भी तत्काल चाणक्य को मालूम हो गई। उसने यह प्रसिद्ध करा दिया कि राक्षस ने विषकन्या-द्वारा पर्वतक की हत्या करा दी।

पर्वतक का पुत्र मलयकेतु उस समय वहीं था। उसके पास विश्वासपात्र बने हुये चाणक्य के आदमी भागुरायण ने उसको यह विश्वास दिलाना शुरू किया कि राक्षस चन्द्रगुप्त से मिल गया है, उसने पर्वतक की हत्या करा डाली और अब तुमको भी मार डालने की कोशिश में है।

राक्षस की चालें

राक्षस भी चुपचाप बैठा न था। चन्द्रगुप्त को मार डालने के लिये वह भी जाल बिछाये बैठा था। उसके आदमी पाटलिपुत्र के निवासियों को चन्द्रगुप्त के विरुद्ध भड़काने में लगे थे।

पर्वतक के मारे जाने पर उसके भाई वैरोचक

को आधा राज्य देने का लोभ देकर चाणक्य ने उसे अपनी ओर मिला लिया था। महानन्द के प्रायः सभी उत्तराधिकारी मारे जा चुके थे और राक्षस भी अब बाहर ही बाहर चालें चल रहा था। ऐसे अवसर में चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को नगर-प्रवेश की सलाह दी। दिन नियत हो गया। उसी दिन वैरोचक को आधा राज्य बाँट देने का भी मुहूर्त्त था।

राक्षस ने पाटलिपुत्र के फाटक पर, जो चन्द्रगुप्त के स्वागत के लिये बना था, अपने गुप्तचरों से ऐसा प्रबन्ध किया था कि चन्द्रगुप्त जब फाटक के नीचे आवे तब उस पर फाटक गिरा दिया जाय। दारुबर्मा नाम का आदमी इस काम के लिये तैनात किया गया था। यदि इससे भी वह बच जाय तो पास ही गुप्त छुरी लिये हुये दूसरा व्यक्ति बर्बरक खड़ा रहे और वह यकायक हमला करके चन्द्रगुप्त को मार दे।

चाणक्य ने जुलूस में वैरोचक को आगे

रक्खा। दारुवर्मा को धोखा हुआ। जल्दी में उसने फाटक गिरा दिया, जिससे बर्बरक दबकर मर गया। इतने में दारुवर्मा ने लोहे की एक कील खींचकर मारा जो वैरोचक को लगा और वह मर गया। चाणक्य ने बड़े ठाट से चन्द्रगुप्त को नगर-प्रवेश कराया।

इतने पर भी राक्षस निराश नहीं हुआ। उसने चन्द्रगुप्त के वैद्य को मिलाया। एक दिन वैद्य ने दवा में विष मिलाकर चन्द्रगुप्त को दिया। चाणक्य के गुप्तचर हरएक बात पर नज़र रखते थे। चाणक्य ने तत्काल पहुँचकर वही दवा वैद्य को पीने को विवश किया। वैद्य दवा पीते ही मर गया।

राक्षस ने चन्द्रगुप्त के महल के नीचे सुरंग खुदवाकर, उसे उड़वा देने के लिये उसमें बारूद भरवाना शुरू किया। एक दिन महल में चींटियाँ चावल के दाने लिये जाती हुई दिखाई पड़ीं। चाणक्य

को उसी वक्त संदेह हुआ कि चावल के दाने कहाँ से आये? उसने जाँच की तो सुरंग का पता लगा।

राक्षस के गुप्तचर चन्द्रगुप्त के निजी नौकरों में भी थे। पर चाणक्य भी ग़ाफ़िल नहीं था। उसने एक-एक को पकड़कर ऐसी ख़ूबसूरती से किनारे लगा दिया कि किसीको उपद्रव करने का मौक़ा ही न मिला। उसने मलयकेतु ही से उसके सहायक पाँच राजाओं को भी मरवा डाला। जिनके विषय में मलयकेतु को एक जाली पत्र-द्वारा चाणक्य ने विश्वास करा दिया था कि वे राक्षस से मिलकर मलयकेतु के राज्य और ख़ज़ाने का बँटवारा करने वाले हैं।

इस घटना के बाद राक्षस की कमर टूट गई। राक्षस का परिवार उसके मित्र चन्दनदास सेठ के घर में था। चाणक्य ने चन्दनदास से राक्षस के परिवार वालों को माँगा। उसने देने से इन्कार किया। चाणक्य ने उसे फाँसी की आज्ञा दी। यह

समाचार पाकर, अपने मित्र को बचाने के लिये राक्षस चन्द्रगुप्त के सामने पहुँचा; उसी समय चाणक्य भी वहाँ आ उपस्थित हुआ। राक्षस के अनुरोध से चन्दनदास की फाँसी रोक दी गई और चाणक्य के अनुरोध से राक्षस ने चन्द्रगुप्त का मन्त्री होना स्वीकार किया।

इस प्रकार पाटलिपुत्र पर चन्द्रगुप्त का निष्कंटक अधिकार हो गया। वह उस सारी सेना और कोष का स्वामी हो गया जिसे महानन्द ने एकत्र किया था।

चन्द्रगुप्त की सेना

पाटलिपुत्र पर अधिकार करने की अपेक्षा राक्षस मंत्री को वश में करना अधिक आवश्यक था, जो चाणक्य की नीति-कुशलता से क़ाबू में आ गया और उसने चन्द्रगुप्त का मंत्री होना स्वीकार भी कर लिया। अब चन्द्रगुप्त मगध राज्य की विशाल सेना का एकमात्र स्वामी हो गया।

सिकन्दर के साथ के यूनानी लेखकों ने मगध के राजा क्सेन्ड्रमस (नन्द) की सेना की संख्या इस प्रकार लिखी है—

२० हज़ार घोड़े, २ लाख पैदल, २ हज़ार रथ और ४ हज़ार हाथी।

प्लूटार्क ने लिखा है—चन्द्रगुप्त ने छः लाख सेना से संपूर्ण भारत को जीत लिया।

मैगस्थनीज़ लिखता है—चन्द्रगुप्त की सेना में ६ लाख पैदल, ३० हज़ार घुड़सवार, ९ हज़ार हाथी और कम से कम ४ हज़ार रथ थे। इनके सिवा जल-सेना और कमसरियट का विभाग अलग था।

सैल्यूकस की चढ़ाई

महानन्द का राज्य कोसल, अवन्ति, वत्स, काशी और अङ्ग देश तक फैला हुआ था। लिच्छवि और शाक्य आदि छोटे-छोटे गण-राज्यों पर भी उसका अधिकार था। पर गंगा के पश्चिमी प्रान्तों पर उसका अधिकार नहीं था।

सिकन्दर की चढ़ाई से पश्चिमी प्रान्तों में जो गड़बड़ी हुई, उसने चन्द्रगुप्त को अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने का अच्छा मौक़ा दिया। सिकन्दर के लौट जाने पर चन्द्रगुप्त ने पञ्जाब और सीमाप्रान्त को यूनानियों के चंगुल से स्वतंत्र कर दिया, और चाणक्य वहाँ के राजाओं को राज्य और ख़ज़ाने का लोभ देकर पाटलिपुत्र पर चढ़ा लाया। पाटलिपुत्र में आकर वे राजा लोग राक्षस की नीति के जाल में फँस गये। इससे चाणक्य ने उन्हीं लोगों में फूट डालकर पर्वतक के पुत्र मलयकेतु से उनकी हत्या करा डाली। अन्त में मलयकेतु को भी चाणक्य के आदमी पकड़कर चंद्रगुप्त के सामने लाये। तब राक्षस की सिफ़ारिश से उसके प्राण बच गये और उसका राज्य भी उसे दे दिया गया; पर वह चंद्रगुप्त की अधीनता ही में रहा। जो-जो राजा चंद्रगुप्त की सहायता को आये थे और राक्षस के साथी बन गये थे, उनके राज्य ज़ब्त कर लिये गये। इस

तरह पञ्जाब और सीमा-प्रान्त पर भी चंद्रगुप्त का पूरा अधिकार हो गया।

सिकन्दर का ईसा से ३२३ वर्ष पहले बैबीलोन नगर में देहान्त हो गया। उसके राज्य के लिये १२ वर्षों तक उसके दो सेनापति सैल्यूकस और एन्टि-गोनस लड़ते रहे। अन्त में सैल्यूकस विजयी हुआ और ईसा से ३०६ वर्ष पहले वह बड़े धूमधाम से सिकन्दर की राजगद्दी पर बैठा।

ईसा से ३०५ वर्ष पहले सैल्यूकस ने सिन्ध और पञ्जाब पर यूनानी राज्य फिर से क़ायम करने की नीयत से चढ़ाई की थी। चन्द्रगुप्त उसके मुक़ाबले के लिये तैयार था। सिन्ध प्रान्त में दोनों नये सम्राटों का सामना हुआ। सैल्यूकस पराजित हुआ और दोनों में संधि हुई। भारतवर्ष और यूनान के बैर को हमेशा के लिये शान्त कर देने की नीयत से अपनी सुन्दरी कन्या हेलेन की शादी सैल्यूकस ने चन्द्रगुप्त के साथ कर दी।

सैल्यूकस और चन्द्रगुप्त की संधि की शर्तें इस प्रकार थीं—

१—सैल्यूकस ने चन्द्रगुप्त को काबुल, हिरात, कन्धार और मकरान के प्रदेश दिये।

२—चन्द्रगुप्त ने सैल्यूकस को ५०० हाथी दिये।

३—संधि को और दृढ़ करने के लिये सैल्यूकस ने अपनी कन्या का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दिया।

अपना राज्य बढ़ाने की नीयत से सैल्यूकस भारत की ओर आया था; पर यहाँ लेने के देने पड़े और चन्द्रगुप्त ने ऐसी मार मारी कि बचे-खुचे यूनानी भी भारत से निकल भागे और फिर उन्होंने भारत की ओर कभी मुँह तक न मोड़ा। सैल्यूकस और चन्द्रगुप्त की यह संधि ईसा से ३०३ वर्ष पहले हुई थी।

सुदर्शन झील

किसानों को सुभीता पहुँचाने की ओर चंद्रगुप्त का बहुत ध्यान रहता था। काठियावाड़ के किसानों

को सिँचाई के लिये जल का बड़ा कष्ट था। इस कष्ट को दूर करने के लिये चन्द्रगुप्त ने गिरनार नदी में बाँध बँधवाकर एक झील तैयार कराया था, जिसका नाम सुदर्शन झील था। उस झील से चारोंओर छोटी-छोटी नहरें निकाली गई थीं और पानी दूर-दूर तक पहुँचाया गया था। यह झील ईसा के १५० वर्ष पीछे तक कायम थी। उस समय के राजा रुद्रदामन ने इस झील की मरम्मत कराई थी। इस सम्बन्ध का एक शिलालेख गिरनार पर्वत पर पाया गया है, जिससे ऊपर की बातें मालूम हुई हैं।

चन्द्रगुप्त का अंतिम काल

चन्द्रगुप्त ने ईसा से ३२२ वर्ष पहले से २९८ वर्ष पहले तक राज्य किया था। उसकी मृत्यु का ठीक-ठीक हाल अभी तक नहीं मालूम हुआ है।

मैगस्थनीज़

मैगस्थनीज़ सैल्यूकस का एक दरबारी था।

यह बड़ा विद्वान था। सैल्यूकस ने इसे अपना राजदूत बनाकर चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था। यह कई वर्षों तक पाटलिपुत्र में रहा। इसने चन्द्रगुप्त की सेना, शासन-व्यवस्था, उस समय के भारत की भौगोलिक अवस्था, उपज और सामाजिक दशा का आँखों-देखा वर्णन एक पुस्तक में लिखा था। वह पुस्तक अब नहीं मिलती; लेकिन उस पुस्तक के उद्धरण उसके बाद के लेखकों ने अपनी पुस्तकों में दिये हैं, जिनसे चन्द्रगुप्त और उसके वक्त के भारत की बहुत-सी सच्ची बातें मालूम हुईं।

मैगस्थनीज़ के वर्णन

चन्द्रगुप्त के समय के भारत का जो वर्णन मैगस्थनीज़ ने किया है वह बहुत ही मनोरंजक है। उससे उस समय की सामाजिक हालत जानकर मन में सुख का अनुभव होने लगता है। क्योंकि वे हमारे पूर्वजों के सद्गुणों के बखान से भरे हुये हैं। यहाँ उसके कुछ उद्धरण दिये जाते हैं—

"खेती करने योग्य ज़मीन का बड़ा भाग पानी से सींचा जाता है। सिँचाई का प्रबन्ध बहुत उत्तम है।"

"कुछ लोग नदियों की देखरेख करते रहते हैं, वे मिस्र देश की तरह भूमियों को नापते भी हैं। बड़ी धारा से छोटी-छोटी नालियाँ निकालने की ओर वे विशेष ध्यान देते हैं।"

"समुद्र या नदी के किनारे पर बसे हुये नगर ईंट और पत्थर के न बनाये जाकर लकड़ी के बनाये जाते हैं। क्योंकि वे सदा के लिये नहीं बनाये जाते। पर जो नगर ऊँचाई पर बसे होते हैं, उनमें ईंट और पत्थर ही के मकान होते हैं।"

"खेती का अधिक भाग सिंचाई में होने के कारण एक वर्ष के भीतर ही दो फ़सलें होती हैं।"

"यहाँ के लोगों को नर्वाह की सामग्री बहुतायत से मिलती है, इससे इनका डौल-डौल मामूली से

अधिक होता है और ये अपनी गर्वीली चाल के लिये प्रसिद्ध होते हैं।"

"भारतवर्ष में अकाल कभी नहीं पड़ा, और न कभी खाने को वस्तुओं की महँगी पड़ी।"

"भारतवासियों में बहुत-सी ऐसी रीतियाँ हैं, जो उनके बीच अकाल पड़ने की संभावना को रोकती हैं। दूसरी जातियों में युद्ध के समय भूमि को नष्ट करने और उसे ऊसर कर डालने की चाल है; पर भारतवासी खेती करने वालों को पवित्र और अवध्य मानते हैं। इससे पड़ोस में युद्ध होते रहने पर भी खेती करने वाले निर्भय रहते हैं। युद्ध करने वाले योद्धा शत्रु के देश को न तो अग्नि से नष्ट करते हैं, न उसके पेड़ काटते हैं।"

"यहाँ वर्ष में दो बार वर्षा होती है—एक जाड़े में, जब गेहूँ बोया जाता है। दूसरी गरमी के अंत में, जो तिल और ज्वार बोने का समय होता है। इससे यहाँ के निवासी हमेशा वर्ष में दो फ़सलें

काटते हैं। एक फ़सल बिगड़ भी जाती है, तो दूसरी पर विश्वास रहता है। देश के प्रायः समस्त मैदानों में ऐसी सीड़ रहती है, जो समभाव से उपजाऊ होती है। वर्षा का जल प्रत्येक वर्ष नियत समय पर आश्चर्य-जनक क्रम से बरसा करता है।"

"भारतवासी कला-कौशल में भी बड़े निपुण पाये जाते हैं, जैसा कि ऐसे मनुष्यों से आशा की जाती है, जो स्वच्छ वायु में साँस लेते हैं और अत्यन्त उत्तम जल पान करते हैं।"

"अधिक सुसभ्य भारतीय समाजों में तरह-तरह के अनेक व्यवसायों में जीवन बिताया जाता है। कोई भूमि जोतता है, कोई सिपाही है, कोई व्यापारी है। उच्च कोटि के और धनी लोग राज-प्रबन्ध में भाग लेते हैं, न्याय करते हैं और राजाओं के साथ सभा में बैठते हैं।"

"यद्यपि भारतवासियों की चाल-ढाल में बड़ी सादगी होती है; पर वे बारीकी और सजावट के

प्रेमी होते हैं; उनके वस्त्रों पर सोने का काम किया रहता है। वे अत्यन्त सुन्दर मलमल के बने हुये फूलदार कपड़े पहनते हैं। सेवक लोग उनके पीछे-पीछे छाता लगाये चलते हैं; क्योंकि वे अपने सौन्दर्य्य का बड़ा ध्यान रखते हैं और अपने स्वरूप को ठीक रखने में सदा सावधान रहते हैं।"

"वे मलमल पहनते हैं, पगड़ी देते हैं, सुगन्धित द्रव्यों का व्यवहार करते हैं और चमकीले रंग वाले कपड़े पहनते हैं।"

"भूमि तो अपने ऊपर हर प्रकार के फल उपजाती ही है; पर उसके गर्भ में भी हर प्रकार की धातुओं की अनगिनत खानें हैं। उनमें सोना-चाँदी बहुत होता है। ताँबा और लोहा भी कम नहीं होता। जस्ता और दूसरी धातुयें भी होती हैं। इनका व्यवहार गहनों, लड़ाई के हथियार और साज आदि बनाने में होता है।"

"भारतवासी यज्ञों के सिवा मदिरा कभी नहीं पीते। इनका भोजन अधिकतर भात है।"

"भारतवासी चमड़े के सफ़ेद जूते पहनते हैं। ये जूते बहुत बढ़िया बने होते हैं। इनकी एँड़ियाँ ऊँची बनाई जाती हैं। जिससे पहननेवाला कुछ अधिक ऊँचा मालूम होने लगता है।"

"भारतवर्ष के विषय में यह ध्यान देने योग्य बात है कि समस्त भारतवासी स्वतन्त्र हैं, उनमें एक भी दास नहीं। भारतीय लोग विदेशियों तक को दास नहीं बनाते, अपने देशवासियों की तो बात ही क्या?"

"गङ्गा नदी और अन्य एक नदी के संगम पर पालीबोथरा (पाटलिपुत्र) स्थित है। यह नगर लम्बाई में ९ मील और चौड़ाई में डेढ़ मील है। यह समानान्तर चतुर्भुजाकार का है। चारों तरफ़ लकड़ी की एक दीवार बनी है। जिसके बीच में तीर छोड़ने के लिये बहुत से छेद बने हैं। दीवार के सामने चारोंओर एक खाईं है जो रक्षा के निमित्त

काम में आती है। वे लोग जिनके बीच में यह नगर स्थित है, सारे भारतवर्ष भर में सबसे प्रख्यात हैं और प्रेसिआई कहलाते हैं। शहरपनाह में ५७० बुर्ज और ६४ फाटक बने हैं।"

"भारतवर्ष की सारी आबादी सात जातियों में बँटी है। पहली जाति दार्शनिकों की है, जो यद्यपि संख्या में कम हैं; पर प्रतिष्ठा में सबसे श्रेष्ठ हैं। भारत के लोगों को इनसे बहुत लाभ पहुँचता है। साल के प्रारम्भ में जब ये लोग एकत्र होते हैं, तब अनावृष्टि, शीत, आँधी और रोग आदि की सूचना पहले ही से दे देते हैं। इसी तरह की अन्य भी बहुत-सी बातें ये पहले ही से बता देते हैं, जिनसे सर्व-साधारण को बहुत लाभ पहुँचता है। जो दार्श-निक अपनी भविष्यवाणी में भूल करता है, उसे निन्दा के सिवा और कोई दण्ड नहीं मिलता। भविष्यवाणी अशुद्ध होने की अवस्था में दार्शनिक फिर जीवन भर के लिये मौन धारण कर लेता है।"

"दूसरी जाति में किसान लोग हैं, जो संख्या में दूसरों से अधिक जान पड़ते हैं। किसान लोग अपनी स्त्रियों और बच्चों के साथ देहात में रहते हैं और नगरों में जाने से बिल्कुल बचते हैं।"

"तीसरी जाति में अहीर, गड़रिये और सब प्रकार के चरवाहे हैं, जो न नगरों में रहते हैं न गाँवों में, बल्कि डेरों में रहते हैं। शिकार तथा पशुओं को जाल आदि में फँसाकर वे देश को हानिकारक पक्षियों और जंगली पशुओं से रहित करते हैं।"

"चौथी जाति कारीगरों की है। इनमें कुछ कवच बनानेवाले हैं, और कुछ किसानों और व्यवसाइयों के लिये औज़ार बनाने का धंधा करते हैं।"

"पाँचवीं जाति सैनिकों की है। शान्ति के समय यह आलस्य और आमोद-प्रमोद में मस्त रहती है।"

"छठी जाति निरीक्षकों की है। ये लोग भारतवर्ष में होनेवाले सभी विषयों की देख-रेख रखते हैं और राजा को, और जहाँ राजा दूर होता है, वहाँ उसके प्रतिनिधि को ख़बर देते हैं।"

"सातवीं जाति शासकों और सभासदों की है। संख्या की दृष्टि से यह जाति सबसे छोटी है; पर ऊँचे चरित्र और बुद्धि के कारण सबसे प्रतिष्ठित है। इसी जाति से मंत्रीगण, कोषाध्यक्ष और न्यायकर्ता लिये जाते हैं। सेनापति भी इसी जाति से चुने जाते हैं।

"भारतीय लोग किफ़ायत के साथ रहते हैं। विशेषतः तब जब वे कैम्प में हों। वे अनियंत्रित भीड़ को नापसन्द करते हैं, इससे वे हमेशा व्यवस्था बनाये रखते हैं।"

"भारतीय लोग अपने चालचलन में सीधे और कमख़र्च होने के कारण बड़े सुख से रहते हैं।"

"वे न्यायालय में बहुत कम जाते हैं। उनमें गिरवी और धरोहर के मुक़द्दमे नहीं होते और न वे मुहर और गवाह की ज़रूरत रखते हैं। वे एक-दूसरे के पास धरोहर रखकर आपस में विश्वास करते हैं। वे अपने घर और सम्पत्ति को प्रायः अरक्षित अवस्था में छोड़ जाते हैं।"

"उनमें कसरत करने की सर्वप्रिय रीति संघर्षण है। संघर्षण चिकने-चिकने आबनूस के बेलनों को चमड़े पर फेरकर होता है।

"सचाई और सदाचार दोनों को वे समान रूप से आदर करते हैं। इससे वृद्धों तक को भी, यदि वे सदाचारी न हुये, तो विशेष अधिकार नहीं देते।"

"भारतवासी मृतक के लिये कोई यादगार नहीं बनाते। वरन् उसकी महिमा को गीतों में सुरक्षित रखना काफ़ी समझते हैं।"

"चोरी बहुत कम होती है।"

"भारतवासियों में विदेशियों तक के लिये कर्मचारी नियुक्त होते हैं। जिनका काम यह होता है कि किसी विदेशी को कोई हानि न पहुँचने पावे। न्यायाधीश लोग विदेशियों से सम्बन्ध रखने वाले मामलों को बड़े ध्यान से सुनते और सच्चा फ़ैसला करते हैं और उन लोगों पर कड़ाई करते हैं जो उनके साथ बुरा व्यवहार करते हैं।"

"ब्राचमनीज़ (ब्राह्मण) लोग दर्शन के ज्ञान को स्त्रियों को नहीं जताते।"

चन्द्रगुप्त का शासन

चन्द्रगुप्त एक बहुत बड़े साम्राज्य का सम्राट् था। शासन की सुव्यवस्था के लिये उसका राज्य चार भागों में बँटा हुआ था—

पहला—पश्चिमोत्तर प्रांत। इसमें अफ़गानिस्तान, बिलोचिस्तान, पंजाब, सिन्ध और काश्मीर शामिल थे। इसकी राजधानी तक्षशिला थी।

दूसरा—दक्षिण-पश्चिम प्रान्त। इसमें गुजरात, मालवा और काठियावाड़ के प्रदेश शामिल थे। इसकी राजधानी उज्जैन थी।

तीसरा—दक्षिणी भारत। इसका अभी तक ठीक पता न चल सका कि यह कहाँ तक फैला हुआ था और उसकी राजधानी क्या थी।

चौथा—मगध। जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी।

चन्द्रगुप्त स्वेच्छाचारी सम्राट् नहीं था। उस पर नियन्त्रण रखने के लिये एक मन्त्रियों का और एक प्रजा के प्रतिनिधियों का परिषद् था।

राज-प्रबन्ध

हरएक मुख्य विषय के लिये एक अलग महकमा था और उसका एक मन्त्री था। राज्य के आय-व्यय के लिये बहुत से विभाग थे। कुछ के नाम ये हैं—

१—टैक्स। यह महकमा व्यापार पर लगने वाला टैक्स वसूल करता था।

२— तौल और माप का महकमा।

३—व्यापार। विधवा, अनाथ, भिखारी, कैदी और राजा की वृद्धा दासियों आदि के लिये राज्य की ओर से सूत कातने, कवच बनाने, कपड़ा बुनने और रस्सी बटने का काम दिया जाता था।

४—खेती। चन्द्रगुप्त खेती की उन्नति पर विशेष ध्यान देता था। राज्य की खेती अलग होती थी और उससे काफ़ी आय थी।

५—शराब। शराब का बनाना और बेचना राज्य के अधिकार में था।

६—क़साईखाना। राज्य का क़साईखाना अलग था। पर इसी महकमे का हाकिम राज्य भर के क़साईखानों पर नियन्त्रण रखता था।

७—पासपोर्ट। देश से बाहर जाने-आने के लिये पासपोर्ट की आवश्यकता पड़ती थी। इसके लिये अलग महकमा था और इस महकमे का बड़ा हाकिम मुद्राध्यक्ष कहलाता था।

८—जङ्गल।

९—घाट। नदियों और समुद्र के पार जाने-आनेवालों के सुप्रबन्ध के लिये एक महकमा था।

१०—पशुशाला।

११—अश्वशाला।

१२—हाथीशाला।

१३—औषधि।

१४—टकसाल। चन्द्रगुप्त के समय के सिक्के का नाम 'पण' था जो कुछ ताँबा आदि धातुओं के मिश्रण से चाँदी का होता था। अठन्नी, चवन्नी और दुअन्नी की तरह उसके भी भाग थे, जो अर्द्धपण आदि कहलाते थे। एक पण आजकल के चौदह आने के मूल्य का था।

१५—खान। लोहा, नमक, सोना आदि धातुओं के निकालने और बेंचने का महकमा अलग था।

१६—सिक्का। सिक्कों के चलन का प्रबन्ध करने के लिये एक हाकिम अलग था।

१७—कोष।

१८—संग्रहालय।

१९—कोठार। अन्न का भांडार।

२०—हथियार। इस महकमे के सिपुर्द हथियारों की तैयारी और उनकी रक्षा का काम था।

२१—जेल।

२२—स्थल-सेना।

२३—जल-सेना।

२४—न्याय।

२५—दंड।

२६—रनवास।

ऊपर के इन विभागों का वर्णन मैगस्थनीज़ ने अपनी पुस्तक में कुछ विस्तार के साथ किया है।

पाटलिपुत्र का नगर-प्रबन्ध

मैगस्थनीज़ ने पाटलिपत्र नगर के प्रबन्ध का

जो वर्णन किया है, उसके अनुसार प्रबन्ध के लिये नगर के प्रतिनिधियों की एक सभा थी, जिसे आजकल की परिभाषा में 'म्युनिसिपल कारपोरेशन' कह सकते हैं।

कारपोरेशन छः उपसमितियों में बँटा हुआ था। प्रत्येक उपसमिति में पाँच-पाँच मेम्बर होते थे। उपसमितियों के काम नीचे लिखे अनुसार बँटे हुये थे—

पहली उपसमिति—शिल्प तथा उद्योग-धंधों का निरीक्षण करना, मज़दूरी की दर निश्चित करना, मज़दूरी के लिये समय नियत करना, इत्यादि।

चन्द्रगुप्त के समय में शिल्पियों का बड़ा मान था। कोई व्यक्ति यदि उनके उस अङ्ग को हानि पहुँचाता था, जिससे वे शिल्प का काम करते थे, तो उसे मृत्यु-दण्ड मिलता था।

दूसरी उपसमिति—विदेशियों की रक्षा तथा उनके सुख-दुःख का ध्यान रखना, उनकी मृत्यु के बाद उनकी जायदाद का प्रबन्ध करना।

तीसरी उपसमिति—मदु मशुमारी करना, जन्म और मृत्यु की सूची रखना।

चौथी उपसमिति—बेंचने और खरीदने के नियम बनाना, तौल और माप निश्चित करना, किसी खास चीज़ के बेंचने के लिये लाइसेंस देना।

पाँचवीं उपसमिति—बाज़ार में बिकने वाले माल की शुद्धता का नियन्त्रण रखना।

छठीं उपसमिति—बिक्री पर लगा हुआ टैक्स वसूल करना।

मैगस्थनीज़ आगे लिखता है—उपसमितियाँ अपने-अपने कामों को अलग-अलग करती हुई भी सामूहिक रूप से सर्वसाधारण के लाभों पर ध्यान रखती हैं। जैसे—सार्वजनिक इमारतों की रक्षा करना, उसकी मरम्मत का ख्याल रखना, बाज़ार दर नियत करना, बाज़ार, मन्दिर और बन्दरगाहों पर ध्यान रखना।

ऐसा ही प्रबन्ध राज्य के अन्य बड़े-बड़े नगरों में भी था।

लगान

चन्द्रगुप्त के समय में किसानों से उनकी उपज का चौथा या पाँचवाँ भाग लगान लिया जाता था। कहत पड़ने पर लगान माफ़ भी कर दिया जाता था।

कर

राज्य की तरफ़ से आयात-निर्यात पर कर लिया जाता था। स्वदेशी के मुक़ाबले में विदेशी चीज़ पर कड़ी चुंगी लगा दी जाती थी जिससे स्वदेशी व्यापार की रक्षा हो। जैसे विदेश से आने वाले नमक पर २ फ़ीसदी चुंगी ली जाती थी। पर विदेशों से व्यापार के लिये प्रोत्साहन भी काफ़ी दिया जाता था।

नाप कर बेंचे जाने वाले पदार्थों पर फ़ी सै० ६$\frac{1}{4}$, तोलकर बेंचे जाने वाले पदार्थों पर फ़ी सै० ५

और गिनकर बेंचे जाने वाले पदार्थों पर फ़ी सै० १ चुंगी ली जाती थी।

उस ज़माने में भी जुआ होता था। पर जुआ के लिये लाइसेन्स लेना पड़ता था। लाइसेन्स में लिखे स्थान के सिवा दूसरे स्थान पर जो कोई जुआ खेलता या खेलाता था, वह सज़ा पाता था।

वेतन

चन्द्रगुप्त के राज्य में राजकर्मचारियों की तनख्वाहें अधिक थीं।

मुख्य कर्मचारियों की तनख्वाहों का ब्योरा यहाँ दिया जाता है—

मन्त्री और पुरोहित	४८००० पण † वार्षिक
सेना-सचिव	४८००० ,, ,,
युवराज	४८००० ,, ,,
राजमाता	४८००० ,, ,,

†पण आजकल के चौदह आने के बराबर होता था।

समाहर्त्ता (The Minister of Revenue)	२४०००	पण	वार्षिक
सन्निधाता (The Minister of Treasury)	२४०००	,,	,,
प्रशास्ता (The Officer-in-charge of Records)	२४०००	,,	,,
आन्तर्वंशिक (The Officer of Royal guards)	२४०००	,,	,,
दौवारिक (Lord Mayor of Palace)	२४०००	,,	,,
नागरक (The Governor of the capital)	१२०००	,,	,,
अन्तपाल (The Governor of Frontiers)	१२०००	,,	,,
नायक (The Commander-in-chief)	१२०००	,,	,,
प्रदेष्टा (The Chief Justice of Administrative court)	८०००	,,	,,
व्यावहारक (Chief Justice of Ordinary court)	१२०००	,,	,,
कार्मान्तिक (Officer-in-charge Manufactories)	१२०००	,,	,,

कुमार	१२००० पण	वार्षिक
मन्त्रि-परिषद् के सदस्य	१२००० ,,	,,
एकाउन्टेन्ट	५०० ,,	,,
रथी	२००० ,,	,,
घुड़सवार	१००० ,,	,,
गुप्तचर	१००० ,,	,,
हाथी सवार	७५० ,,	,,
पैदल सिपाही	५०० ,,	,,
माईस	६० ,,	,,
चरवाहा	६० ,,	,,

विविध

चन्द्रगुप्त के राज्य में गरमी के दिनों में दोपहर के समय आग जलाने की मुमानियत थी।

नावों और जहाज़ों का चलन ख़ूब था। महा-समुद्रों तक में व्यापारी जहाज़ जाया आया करते थे।

उस समय भी समुद्री डाकू थे। उनसे रक्षा करने के लिये चन्द्रगुप्त ने जहाज़ पर सैनिक रख छोड़े थे।

सड़कों पर आधे आधे कोस पर दूरी-सूचक पत्थर लगे थे। जहाँ से राहें फूटती थीं, वहाँ साइनबोर्ड लगे रहते थे, जिनसे स्थानों के पते चलते थे।

तक्षशिला और पाटलिपुत्र को मिलाने वाली पक्की सड़क ५०० कोस लम्बी थी। उस समय का कोस आजकल के २०२२॥ गज का था।

नगरों में राजमार्ग ३२ फीट चौड़ा होता था। श्मशान के लिये अलग रास्ता होता था।

कपड़े कपास, रेशम, सन और ऊन के बनते थे। चीन का रेशमी कपड़ा अच्छा समझा जाता था।

मनुष्य और पशु दोनों के लिये अलग अलग चिकित्सक थे। गर्भ की चीर-फाड़ करनेवाले चिकित्सक भी थे। इलाज की उपेक्षा करने पर वैद्य को राज्य से दंड मिलता था।

चमड़े का भी व्यवसाय होता था। चमड़े कई रंगों में रँगे जाते थे।

दूकानदार लोग जो मुनाफा लेते थे, वह भी राज्य से निश्चित किया जाता था। देशी चीज़ पर ५ फ़ीसदी और विदेशी चीज़ पर दस फ़ीसदी से अधिक मुनाफ़ा कोई नहीं ले सकता था।

व्यापारी काफ़िलों की रक्षा का बहुत ही अच्छा प्रबंध था। व्यापारी लोग बड़ी बड़ी कम्पनियाँ खड़ी करके व्यापार चलाते थे, जिनको 'सम्भूय समुत्थान' कहा जाता था।

उस समय शहर बहुत थे। यूनानी लेखकों के कथनानुसार अकेले पञ्जाब के राजा पुरु के राज्य में २००० शहर थे।

सिक्के ढालने के लिये टकसाल होती थी। टकसाल के सुपरिंटेण्डेण्ट को 'सौवर्णिक' कहा जाता था।

लोग अपना सोना चाँदी देकर भी सिक्के ढलवा सकते थे।

सूद पर रुपये देने-लेने का नियम था। सूद १५ पण फ़ीसदी सालाना से कम नहीं था।

लोगों के आमोद-प्रमोद के लिये पशु-संग्रहालय और अजायबघर भी थे।

मैगस्थनीज़ लिखता है--राजा जब शिकार खेलने जाता है, स्त्रियों की भीड़ उसे घेरे रहती है। उस घेरे के बाहर बरछे वाले रहते हैं। राजा एक चबूतरे से तीर चलाता है। उसकी बगल में दो वा तीन हथियारबन्द स्त्रियाँ खड़ी होती हैं। स्त्रियों में से कुछ तो रथ के भीतर रहती हैं, कुछ घोड़ों पर और कुछ हाथियों पर। वे हर प्रकार के हथियारों से सजी रहती हैं।

उन दिनों मृतक श्राद्ध किया जाता था और यज्ञों में तथा देवता के लिये बलिदान भी होता था।

मैगस्थनीज़ लिखता है—जब भारतवासी खाने बैठते हैं, तब प्रत्येक व्यक्ति के सामने मेज़ रक्खी

जाती है, जो तिपाई की शकल की होती है। उसके ऊपर पहले सोने का प्याला रक्खा जाता है। वे सदैव अकेले भोजन करते हैं।

मर्दुमशुमारी का काम समाहर्त्ता के सुपुर्द था। उस ज़माने में प्रत्येक वर्ष मर्दुमशुमारी होती थी। मनुष्य ही नहीं, पशु और दूसरे जन्तु भी गिने जाते थे। रजिस्टर को 'निबन्ध-पुस्तक' कहते थे।

जन्म और मृत्यु का बहुत सच्चा लेखा रक्खा जाता था।

गुप्तचरों का प्रबन्ध बहुत उत्तम था। हर एक समाज में गुप्तचर मुकर्रर थे।

तेज घोड़ों पर डाक ले जाने का प्रबन्ध था। कबूतरों से भी चिट्ठियाँ भेजी जाती थीं।

सम्राट् चन्द्रगुप्त के सम्बन्ध की और अधिक बातों की जानकारी के लिये प्रो० सत्यकेतु विद्यालङ्कार लिखित 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास' पढ़ना चाहिये। इस जीवनी में उक्त पुस्तक से भी सहायता ली गई है। लेखक